मार चूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, सब, भोबोगिक विवाद मिश्चितियम, 1947 को धारा 10 को उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान को गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी बिधिधुचना सं० 3(44)-84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त मिर्धान्यम की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, मम्बाल। को विवादमस्त या उससे सम्बधित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंय एव पंचाट तीन मास दने हेतु निदिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत मथना सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्वा सत्वार सिंह, मक्तऊंट कलर्क को सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बद्ध किस राहत का हुकदार है ?

सं॰ भा॰ वि॰/रोहतक/43-87/12680- चूकि ह्रियाणा के राज्यपाल की राय है कि मं॰ एलाईड पोल (इण्डिया) लि॰, 239, मोडरन इण्डस्ट्रायल ईस्टेट, बहादुरगढ़-124507, के श्रीमिक श्री शिव शकर माफत श्री श्रार० एस० दिह्या, लेवर यूनियन एटक ग्राफिस, राहतक रोड, बहादुरगढ़ तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई माद्यागिक विवाद हैं;

ब्रोर चूकि हारेयाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनोय समझते हुँ ;

इसलिए, अब, आंबोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 को धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई क्षित्यों का प्रयोग करते हुए हरियाणा क राज्यपाल इसक द्वारा सरकारी अधिसूचना स० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनाक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गांठत सरकारी आंधिनियम की धारा 7 क अधीन गांठत श्रम न्यायालय, राहतक का विवादग्रस्त था उससे सुसंगत या उससे सम्बान्धत नाचे लिखा मामला न्यायालयं एवं पचाट तीन मास म देने हुतू । नादण्ड करते हु जो कि उन्त प्रयन्धका तथा श्रमिक के बाच या तो विवादग्रस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बान्धत मामला है:— •

भया भी शिव शंकर की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठाक है? यदि नहीं, को वह किस राहत का हकदार है?

सं० भो०वि०/रोह/36-87/12687.—चूंक ह्रार्याण क राज्यपाल की राय है कि मं० (1) दा रोहतक अशोका थियेटर प्रा० लि०, रोहतक, (2) में० भार०आर० इन्टरप्राहींजन, लिखा माफत भारत ट्रेक्टरज, पुराना किला रोड़, राहतक के अमिक श्रो नारायण दास, बाढ़ नं० 17, मकान नं० 424, गजा नं० 2, रवा दास नगर गुरुदार के नजदाक, राहतक तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोइ मोद्योगिक विवाद है;

मार चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनाय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव, भोद्योगिक विवाद भाषानियम, 1947, का धारा 10 की उपधारा (1) क खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई गिलियों का प्रयोग करते हुये हीरयाणा क राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्चना सं० 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के भधीन गठित श्रम न्यायालय, राहतक, का विवादग्रस्त या उससे सुसगत या उससे सर्वाधत नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हतु निर्दिष्ट करते हैं जा कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसगत श्रयवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री नारायण दास की सेवाशों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कित राहत का हुकदार है ? सं भो वि | पानी | 18-87 | 12697 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल का राय है कि मैं शाहकुम्भराह फिनिशिय वर्कस्य देस राज कालोनो, पानीपत के श्रमिक श्री देवी सहाय मार्फेट टैक्सटाईल मजदूर संघ, पानोपर तथा उसक प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौधायिक विवाद है ;

क्षार चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हुतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हु

्रसिलिये, मब, मोधोगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की भारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं• 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984 द्वारा उन्त मिधिसूचना की धारा 7 के भधीन गठित श्रम न्यायालय, शम्बाला, को विवादमस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त सामला है या विवाद से सुसंगत सथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री देवी सहाय की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं कार्य छोड़ कर नौकरों से अनना पुनंत्र हणाधिकार (जियन) खोया है ? इस बिन्दू पर निर्णय के फखस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?